Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

छत्तीसगढ़ के धार्मिक पर्यटन स्थलों का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

(राजिम एवं चंपारण धार्मिक स्थल के विशेष सन्दर्भ में)

[1]सुश्री भामती साहू, [2]डॉ. मुमताज़ परवीन
[1]भूगोल विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़
[2]हिंदी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय, गरियाबंद, छत्तीसगढ़

शोध-सार

छत्तीसगढ़ राज्य धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध है, जहाँ विभिन्न धर्मों से संबंधित बल्कि स्थानीय समाज,अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक संरचना के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक स्थलों कासामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है। अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करते हुए धार्मिक पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव, स्थानीय रोजगार सृजन, सांस्कृतिक संरक्षण और आधारभूत संरचना के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। परिणामतः धार्मिक पर्यटन ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों को मुख्यधारा के विकास से जोड़ता है, स्थानीय आय और रोजगार को बढ़ाता है और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करता है हालांकि, अधोसंरचना की कमी, परिवहन बाधाएँ, पर्यावरणीय दबाव और स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी जैसी चुनौतियाँ इसके सतत विकास में बाधक हैं। यह शोध सुझाव देता है कि सुनियोजित, पर्यावरण-संवेदनशील और समुदाय-आधारित दृष्टिकोण अपनाकर धार्मिक पर्यटन का संतुलित एवं सतत विकास संभव है। प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक पर्यटन स्थलों का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अध्ययन करने हेतु तैयार किया गया है। अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है जिसमें धार्मिक पर्यटन के सामाजिक, आर्थिक तथा क्षेत्रीय प्रभावों का समग्र विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : धार्मिक-पर्यटन, सामाजिक, आर्थिक प्रभाव, छत्तीसगढ़, सांस्कृतिक संरक्षण, स्थानीय रोजगार ।

प्रस्तावना

आधुनिक युग में पर्यटन को किसी भी क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास का एक प्रभावशाली माध्यम माना जाता है। विशेषकर विकासशील देशों में पर्यटन न केवल आय एवं रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण स्रोत है, बल्कि क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने तथा स्थानीय संसाधनों के सतत एवं संतुलित उपयोग में भी सहायक सिद्ध होता है। भारत जैसे प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं से समृद्ध राष्ट्र में पर्यटन का धार्मिक स्वरूप विशेष महत्व रखता है, जहाँ तीर्थयात्रा की परंपरा वैदिक काल से ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग रही है। धार्मिक पर्यटन की अवधारणा पारंपरिक तीर्थयात्रा से विकसित होकर आधुनिक पर्यटन उद्योग के एक संगठित, योजनाबद्ध एवं विस्तारित स्वरूप के रूप में उभरकर सामने आई है। यह न केवल धार्मिक आस्था की पूर्ति का माध्यम है, बल्कि सांस्कृतिक संपर्क को सुदृढ़ करने, सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने तथा स्थानीय एवं क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।"धार्मिक पर्यटन लोककला, लोकसंगीत और परंपराओं के संरक्षण में सहायक है ।"[1] विभिन्न विद्वानों के मतानुसार धार्मिक पर्यटन को तीर्थयात्रा का ही एक विकसित एवं व्यापक रूप माना जा सकता है, जिसमें श्रद्धा के साथ-साथ अवकाश, ज्ञानार्जन तथा अनुभव-संपन्न यात्रा की भावना भी अंतर्निहित होती है।

"छत्तीसगढ़ राज्य धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध प्रदेश है। यहाँ हिंदू, जैन, बौद्ध, ईसाई एवं सिख धर्मों से संबंधित अनेक पवित्र स्थल स्थित हैं, जो राज्य के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में फैले हुए हैं।"[2] राजिम, डोंगरगढ़, चाम्पारण, गिरौधपुरी, भोरमदेव, दंतेश्वरी, कंकुरी कैथेड्रल तथा शदाणी दरबार जैसे धार्मिक स्थल न केवल आस्था के प्रमुख केंद्र हैं, बल्कि अपनी स्थापत्य विशेषताओं, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्राकृतिक परिवेश के कारण पर्यटन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं ।
धार्मिक पर्यटन का आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास से गहरा एवं बहुआयामी संबंध स्थापित होता है। इसके विकास से स्थानीय स्तर पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अनेक अवसर सृजित होते हैं, साथ ही परिवहन, आवास, संचार, बाजार तथा अन्य आधारभूत अवसंरचनाओं के विकास को भी गति मिलती है। पर्यटन उद्योग की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अकुशल, अर्द्ध-कुशल एवं कुशल तीनों वर्गों के लिए व्यापक रोजगार अवसर प्रदान करता है, जिससे आय सृजन के साथ-साथ समावेशी एवं संतुलित विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

धार्मिक पर्यटन से संबंधित साहित्य का अध्ययन यह स्पष्ट करता है, कि पर्यटन का यह स्वरूप सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रारंभिक अध्ययनों में तीर्थयात्रा को केवल धार्मिक आस्था से जुड़ी गतिविधि माना गया, किंतु आधुनिक शोधों में इसे पर्यटन उद्योग के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्वीकार किया गया है। अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि लंबे समय तक तीर्थयात्रा और धार्मिक पर्यटन पर पर्याप्त शोध नहीं हुआ, जबकि इसका सामाजिक और आर्थिक प्रभाव अत्यंत व्यापक है। धार्मिक पर्यटन को पर्यटन अध्ययन का अपेक्षाकृत उपेक्षित क्षेत्र माना गया है, जिस पर गहन शोध की आवश्यकता है। इसमें मंदिर, तीर्थ, पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठान, मेले और पर्व शामिल होते हैं, जो पर्यटकों को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करते हैं। भारतीय परिप्रेक्ष्य में धार्मिक पर्यटन को तीर्थयात्रा का विकसित स्वरूप माना गया है और इसके प्रशासन एवं प्रबंधन पर विशेष बल दिया गया है।

छत्तीसगढ़ के संदर्भ में यह देखा गया है, कि राज्य में धार्मिक पर्यटन की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं, किंतु विपणन, परिवहन और अधोसंरचना की कमी के कारण उनका समुचित दोहन नहीं हो पा रहा है। राज्य के प्रमुख धार्मिक स्थलों की संभावनाओं और चुनौतियों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि धार्मिक पर्यटन न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर सकता है, बल्कि क्षेत्रीय संतुलन और समावेशी विकास स्थापित करने में भी सहायक हो सकता है। उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है, कि धार्मिक पर्यटन का क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन पर गहन एवं बहुआयामी प्रभाव पड़ता है। तथापि, छत्तीसगढ़ राज्य के धार्मिक पर्यटन स्थलों के संदर्भ में उनके आर्थिक प्रभावों, सामाजिक परिवर्तन तथा सांस्कृतिक विकास से जुड़े आयामों पर केंद्रित व्यवस्थित एवं समग्र शोध कार्य अपेक्षाकृत सीमित हैं। अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

- धार्मिक पर्यटन के क्षेत्रीय आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना, विशेष रूप से रोजगार सृजन एवं स्थानीय आय में वृद्धि के संदर्भ में।
- धार्मिक पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण एवं आदिवासी क्षेत्रों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव की भूमिका का अध्ययन करना।
- छत्तीसगढ़ के धार्मिक पर्यटन स्थलों के सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव।

सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास से संबंधित अध्ययनों में वर्णनात्मक पद्धति उपयुक्त मानी जाती है क्योंकि इसके माध्यम से किसी क्षेत्र की वास्तविक परिस्थितियों का तथ्यपरक विवेचन संभव हो पाता है। "तीर्थ यात्राओं के माध्यम से छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त होती है।"[3]

यह अध्ययन गुणात्मक प्रकृति का है और इसमें मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक आंकड़े भारत सरकार और छत्तीसगढ़ शासन के प्रकाशित प्रतिवेदनों, पर्यटन विभाग की पुस्तिकाओं, सांख्यिकीय संकलनों, शोध-पत्रिकाओं पुस्तकों और पूर्व प्रकाशित शोध-पत्रों से संकलित किए गए हैं। अध्ययन क्षेत्र के रूप में संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य को शामिल किया गया है। राज्य के मैदानी, पठारी, वन और आदिवासी अंचलों में स्थित प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों का अध्ययन इसमें सम्मिलित किया गया है। क्षेत्रीय विकास के विश्लेषण में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों का समावेश आवश्यक माना गया है, ताकि संतुलित और तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकें। "धार्मिक पर्यटन के क्षेत्रीय आर्थिक प्रभाव, सामाजिक परिवर्तन तथा आधारभूत संरचनात्मक विकास का विश्लेषण विभिन्न विद्वानों के निष्कर्षों के आलोक में किया गया है। तीर्थ और धार्मिक पर्यटन से संबंधित अध्ययनों में इसी प्रकार की विश्लेषणात्मक विधि को वैज्ञानिक रूप से मान्य और उपयुक्त माना गया है। " [4]

छत्तीसगढ़ राज्य का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिचय

छत्तीसगढ़ राज्य भारत के मध्य भाग में स्थित एक प्रमुख राज्य है, जो अपने विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप, समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों तथा बहुआयामी सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। इसकी सीमाएँ उत्तर में मध्य प्रदेश, उत्तर-पूर्व में उत्तर प्रदेश, पूर्व में ओडिशा, दक्षिण में तेलंगाना तथा पश्चिम में महाराष्ट्र से जुड़ी हुई हैं। भौगोलिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ का कुल क्षेत्रफल लगभग १३५०००० वर्ग किलोमीटर है, जिसमें उपजाऊ मैदानी क्षेत्र, विस्तृत पठारी भू-भाग, सघन वन क्षेत्र तथा पहाड़ी अंचल सम्मिलित हैं। छत्तीसगढ़ की भौगोलिक संरचना को मुख्यतः तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है छत्तीसगढ़ का मैदानी क्षेत्र, बस्तर का पठारी क्षेत्र तथा सरगुजा का पहाड़ी क्षेत्र। यह भौगोलिक विविधता राज्य को न केवल प्राकृतिक दृष्टि से समृद्ध बनाती है, बल्कि इसे सांस्कृतिक एवं धार्मिक रूप से भी विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। राज्य का एक विस्तृत भू-भाग घने वनों एवं आदिवासी बहुल क्षेत्रों से

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

आच्छादित है, जहाँ धार्मिक आस्थाएँ प्रकृति-पूजा, लोकदेवताओं तथा पारंपरिक मान्यताओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ को जनजातीय संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र माना जाता है। राज्य में गोंड, मुरिया, हल्बा, उरांव, कंवर सहित अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं । कोई भी धार्मिक पर्यटन स्थल उस क्षेत्र या अंचल की लोककला, लोकसंगीत और परंपराओं के संरक्षण में सहायक होती है । इसके अतिरिक्त राज्य में हिंदू, जैन, बौद्ध, ईसाई एवं सिख धर्मों से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल स्थित हैं, जो न केवल धार्मिक आस्था के प्रमुख केंद्र हैं, बल्कि क्षेत्रीय पर्यटन के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्रों में राजिम, चाम्पारण तथा सिरपुर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थल स्थित हैं, जबकि पहाड़ी अंचलों में डोंगरगढ़, भोरमदेव एवं बस्तर क्षेत्र में दंतेश्वरी जैसे प्रसिद्ध धार्मिक केंद्र विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त गिरौधपुरी, कंकुरी कैथेड्रल तथा शदाणी दरबार जैसे स्थल राज्य की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता को प्रभावशाली रूप से प्रदर्शित करते हैं।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल

"धार्मिक पर्यटन विभिन्न सामाजिक वर्गों के मध्य आपसी संवाद और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करता है।" [5] छत्तीसगढ़ राज्य धार्मिक विविधता एवं सांस्कृतिक समृद्धि के लिए जाना जाता है। राज्य के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित धार्मिक स्थल न केवल आस्था के केंद्र हैं, बल्कि क्षेत्रीय पर्यटन एवं विकास की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये स्थल राज्य के मैदानी, पहाड़ी एवं आदिवासी अंचलों में फैले हुए हैं, जिससे धार्मिक पर्यटन के माध्यम से संतुलित क्षेत्रीय विकास की संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

1. राजिम

राजिम छत्तीसगढ़ राज्य का एक प्रमुख धार्मिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन स्थल है, जिसे प्रायः"छत्तीसगढ़ का प्रयाग" भी कहा जाता है। यह स्थल रायपुर जिले में महानदी, पैरी एवं सोंढूर नदियों के संगम पर स्थित है, जो इसे धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र बनाता है। संगम स्थल पर स्थित होने के कारण राजिम का ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक महत्व प्राचीन काल से ही रहा है। राजिम का प्रमुख आकर्षण राजीव लोचन मंदिर है, जो भगवान विष्णु को समर्पित एक प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है तथा कलचुरी कालीन कला एवं संस्कृति की झलक प्रदान करता है। मंदिर की शिल्पकला, मूर्तिकला एवं वास्तु संरचना इसे धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ सांस्कृतिक पर्यटन का भी महत्वपूर्ण केंद्र बनाती है। राजिम में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला **राजिम कुंभ कल्प मेला** धार्मिक पर्यटन को व्यापक स्वरूप प्रदान करता है। इस मेले में देश-विदेश से श्रद्धालु, साधु-संत एवं पर्यटक बड़ी संख्या में सम्मिलित होते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। आवास, परिवहन, हस्तशिल्प, स्थानीय व्यापार एवं सेवा क्षेत्रों में इस आयोजन के माध्यम से रोजगार के अवसर सृजित होते हैं, जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। सामाजिक दृष्टि से राजिम पर्यटन स्थल स्थानीय समुदायों के बीच सामाजिक समन्वय एवं सांस्कृतिक सहभागिता को बढ़ावा देता है। विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, मेलों एवं उत्सवों के माध्यम

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

से पारंपरिक रीति-रिवाजों, लोकसंस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों का संरक्षण होता है। साथ ही बाहरी पर्यटकों के आगमन से सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया भी सुदृढ़ होती है।

2. डोंगरगढ़

डोंगरगढ़, राजनांदगांव जिले में स्थित एक प्रसिद्ध शक्तिपीठ है, जहाँ माँ बम्लेश्वरी का मंदिर पहाड़ी पर स्थित है। यह स्थल धार्मिक आस्था के साथ-साथ साहसिक एवं प्राकृतिक पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या वर्षभर बनी रहती है, जिससे पहाड़ी क्षेत्र में पर्यटन आधारित रोजगार के अवसर सृजित होते हैं ।

3. चम्पारण

चम्पारण रायपुर जिले में स्थित एक प्रमुख वैष्णव तीर्थ है। यह स्थल वल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक महाप्रभु वल्लभाचार्य की जन्मस्थली के रूप में जाना जाता है। यहाँ स्थित मंदिर एवं धार्मिक संरचनाएँ वैष्णव परंपरा का महत्वपूर्ण केंद्र हैं। यह स्थान विशेष रूप सेमहाप्रभु वल्लभाचार्य जीकी जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है, जिनका जन्म सन् १४७९ ई. में चम्पारण में हुआ था। वल्लभाचार्य जी पुष्टिमार्ग संप्रदाय के प्रवर्तक थे, अतः यह स्थल वैष्णव परंपरा में अत्यंत पवित्र एवं श्रद्धेय माना जाता है। चम्पारण का धार्मिक महत्व मुख्यतःश्री वल्लभाचार्य मंदिर से जुड़ा हुआ है, जहाँ प्रतिवर्ष देश के विभिन्न भागों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन हेतु आते हैं। यह मंदिर न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि यह स्थल वैष्णव दर्शन, भक्ति आंदोलन एवं धार्मिक शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार का भी प्रमुख केंद्र रहा है। यह धार्मिक स्थल प्राकृतिक सौंदर्य से भी समृद्ध है। यहाँ स्थित चम्पा जलाशय (चम्पा कुण्ड) श्रद्धालुओं के लिए स्नान एवं धार्मिक अनुष्ठानों का प्रमुख स्थान है। मान्यता है कि इस कुंड का जल पवित्र एवं चमत्कारी है, जिससे श्रद्धालुओं की गहरी आस्था जुड़ी हुई है। चम्पारण में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले धार्मिक उत्सव, विशेषकर वल्लभ जयंती एवं अन्य वैष्णव पर्व, इस स्थल को धार्मिक पर्यटन के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में स्थापित करते हैं। इन आयोजनों के दौरान क्षेत्र में धार्मिक गतिविधियों के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है जिससे स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

4. गिरौधपुरी धाम

गिरौधपुरी धाम बलौदाबाजार-भाटापारा जिले में स्थित है और सतनामी समाज का प्रमुख धार्मिक केंद्र है। यह स्थल गुरु घासीदास जी की तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले धार्मिक आयोजनों और मेलों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होते हैं, जिससे स्थानीय क्षेत्र में आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

5. दंतेश्वरी मंदिर

दंतेश्वरी मंदिर दंतेवाड़ा जिले में स्थित एक प्राचीन शक्तिपीठ है, जो बस्तर अंचल में धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र माना जाता है। यह मंदिर आदिवासी संस्कृति और धार्मिक परंपराओं का महत्वपूर्ण प्रतीक है। दंतेश्वरी मंदिर के आसपास धार्मिक पर्यटन के विकास से बस्तर क्षेत्र में आधारभूत संरचना के विकास और स्थानीय आजीविका के अवसरों में वृद्धि की व्यापक संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

6. कंकुरी कैथेड्रल

कंकुरी कैथेड्रल जशपुर जिले में स्थित है और ईसाई धर्म का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। यह गिरजाघर अपनी स्थापत्य शैली एवं विशाल संरचना के लिए जाना जाता है। यहाँ विभिन्न धार्मिक अवसरों पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होते हैं, जिससे क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा मिलता है ।

7. शदाणी दरबार

रायपुर जिले में शदाणी दरबार सिंधी समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। यह स्थान संत शदाराम जी महाराज से जुड़ा होने के कारण देश-विदेश से श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। धार्मिक पर्यटन के कारण इस स्थल के आसपास के शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों और व्यवसायिक संभावनाओं में वृद्धि देखी जाती है। उपरोक्त धार्मिक स्थल यह स्पष्ट करते हैं, कि छत्तीसगढ़ राज्य में धार्मिक पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं।

छत्तीसगढ़ में विभिन्न धर्मों से संबंधित धार्मिक पर्यटक स्थल

छत्तीसगढ़ राज्य धार्मिक सहिष्णुता एवं बहुधार्मिक सांस्कृतिक परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ विभिन्न धर्मों से संबंधित धार्मिक स्थल न केवल आस्था के केंद्र हैं, बल्कि सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विविधता एवं क्षेत्रीय विकास के महत्वपूर्ण आधार भी हैं। "धार्मिक पर्यटन स्थानीय बाजारों और लघु उद्योगों के विस्तार में सहायक सिद्ध होता है।" [6] धार्मिक पर्यटन के संदर्भ में छत्तीसगढ़ की विशेषता यह है कि राज्य में हिंदू, जैन, बौद्ध, ईसाई, सिख एवं इस्लाम धर्म से जुड़े धार्मिक स्थल समान रूप से विद्यमान हैं, जो इसे एक बहुधार्मिक पर्यटन क्षेत्र के रूप में स्थापित करते हैं ।

(क) हिंदू धर्म से संबंधित धार्मिक स्थल

छत्तीसगढ़ में हिंदू धर्म से जुड़े धार्मिक स्थल सबसे अधिक हैं। राज्य के प्रमुख केंद्रों में राजिम का राजीवलोचन मंदिर, डोंगरगढ़ का बम्लेश्वरी मंदिर, भोरमदेव मंदिर, दंतेश्वरी शक्तिपीठ, सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर और रतनपुर के मंदिर शामिल हैं। ये स्थल धार्मिक आयोजनों, मेलों और पारंपरिक अनुष्ठानों के माध्यम से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय समुदायों में आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं और सांस्कृतिक परंपराओं का संवर्धन भी होता है।

(ख) जैन धर्म से संबंधित धार्मिक स्थल

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

छत्तीसगढ़ में जैन धर्म से जुड़े कुछ प्रमुख स्थल जैसे कैवल्य धाम (कुम्हारी), सिरपुर का जैन विहार और रतनपुर का जैन मंदिर, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं। ये स्थल न केवल जैन स्थापत्य कला की अनूठी शैली को दर्शाते हैं, बल्कि अहिंसा और तपस्या की परंपराओं को भी उजागर करते हैं, जिससे श्रद्धालु और पर्यटक दोनों प्रेरित होते हैं। जैन तीर्थ स्थलों पर देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालु आते हैं, जिससे संबंधित क्षेत्रों में धार्मिक पर्यटन की संभावनाएँ विकसित होती हैं ।

(ग) बौद्ध धर्म से संबंधित धार्मिक स्थल

छत्तीसगढ़ में बौद्ध धर्म से जुड़े स्थल राज्य की प्राचीन सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं। सिरपुर में स्थित आनंद प्रभु कुटी विहार और अन्य बौद्ध अवशेष इस क्षेत्र की समृद्ध बौद्ध परंपरा के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। ये स्थल न केवल धार्मिक पर्यटन के लिए आकर्षक हैं, बल्कि ऐतिहासिक और शैक्षणिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त हैं।

(घ) ईसाई धर्म से संबंधित धार्मिक स्थल

ईसाई धर्म से संबंधित प्रमुख स्थल जशपुर जिले में स्थित कंकुरी कैथेड्रल है, जो एशिया के प्रमुख गिरजाघरों में से एक माना जाता है। यह गिरजाघर अपनी स्थापत्य शैली, धार्मिक आयोजनों एवं सामाजिक गतिविधियों के कारण पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। इससे जशपुर अंचल में धार्मिक पर्यटन एवं क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहन मिलता है ।

(ङ) इस्लाम धर्म से संबंधित धार्मिक स्थल

छत्तीसगढ़ में इस्लाम धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण स्थलों में लुतरा शरीफ (बिलासपुर जिला) विशेष स्थान रखता है। यह स्थल सूफी परंपरा से जुड़ा हुआ है और विभिन्न समुदायों के लोग श्रद्धा और भक्ति के साथ यहाँ आते हैं। लुतरा शरीफ न केवल धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है, बल्कि धार्मिक पर्यटन के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान करता है।

(च) सिख धर्म से संबंधित धार्मिक स्थल

छत्तीसगढ़ में सिख धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण गुरुद्वारे मुख्यतः रायपुर, बिलासपुर और दुर्ग जैसे शहरी केंद्रों में स्थित हैं। ये स्थल न केवल सिख समुदाय की धार्मिक आस्था का केंद्र हैं, बल्कि सामाजिक सेवा और सामुदायिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गुरुद्वारों में आयोजित धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों से शहरी क्षेत्रों में धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहन मिलता है।

छत्तीसगढ़ के धार्मिक पर्यटक स्थलों का यह बहुधार्मिक स्वरूप राज्य को एक विशिष्ट धार्मिक पर्यटन क्षेत्र के रूप में स्थापित करता है। सभी धर्मों से संबंधित स्थलों का समावेश धार्मिक पर्यटन के माध्यम से सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण को सशक्त आधार प्रदान करता है।

मूल शोध

धार्मिक पर्यटन किसी भी क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचे को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की निरंतर उपस्थिति से स्थानीय समाज, अर्थव्यवस्था

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

तथा जीवनशैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में धार्मिक पर्यटन का प्रभाव विशेष रूप से ग्रामीण, आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है ।

आर्थिक प्रभाव

धार्मिक पर्यटन से स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है। धार्मिक स्थलों के आसपास आवास, भोजनालय, परिवहन, दुकानदारी, फूल-प्रसाद विक्रय, हस्तशिल्प तथा अन्य सेवा गतिविधियों का विकास होता है। इससे स्थानीय लोगों के लिए स्वरोजगार एवं रोजगार के नए अवसर सृजित होते हैं। "छत्तीसगढ़ के राजिम, डोंगरगढ़, दंतेवाड़ा एवं गिरौधपुरी जैसे स्थलों पर धार्मिक आयोजनों के समय स्थानीय आय में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जाती है ।"[7] धार्मिक पर्यटन स्थानीय बाजारों के विस्तार को प्रोत्साहित करता है और क्षेत्रीय उत्पादों को अधिक व्यापक पहचान दिलाता है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण और लघु व्यवसायों को समर्थन मिलता है, जो समग्र क्षेत्रीय आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान देता है।

राजिम एक प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल होने के कारण स्थानीय एवं क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। विशेष रूप से **राजिम कुंभ कल्प मेला** के दौरान पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होती है, जिससे स्थानीय व्यापारिक गतिविधियाँ तीव्र हो जाती हैं। आवास व्यवस्था, परिवहन सेवाएँ, भोजनालय, धार्मिक सामग्री की दुकानें, हस्तशिल्प एवं स्थानीय उत्पादों की बिक्री से स्थानीय निवासियों की आय में वृद्धि होती है। "धार्मिक पर्यटन ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन एवं आय वृद्धि का प्रभावी माध्यम बनता है।" [8] धार्मिक पर्यटन के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं, जिनमें होटल कर्मी, दुकानदार, नाविक, परिवहन चालक, गाइड एवं अस्थायी विक्रेता सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त, बुनियादी ढाँचे के विकास जैसे सड़क, विद्युत, जलापूर्ति एवं स्वच्छता सुविधाओं के विस्तार से क्षेत्रीय आर्थिक सुदृढ़ीकरण को बल मिलता है।

चम्पारण का धार्मिक महत्व स्थानीय अर्थव्यवस्था में सकारात्मक योगदान देता है। फाल्गुन महोत्सव और अन्य धार्मिक आयोजनों के समय देशभर से भक्त और साधु-संत यहाँ आते हैं, जिससे पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। यात्रियों की बढ़ती आवाजाही से होटल, भोजनालय, दुकानों, वाहन सेवाओं, प्रसाद, धार्मिक वस्तुओं, स्थानीय हस्तकला और बाजार से जुड़े लोगों को रोज़गार मिलता है। मेले के दौरान अस्थायी रोजगार भी उत्पन्न होता है। इसके अलावा धार्मिक संस्थानों द्वारा संचालित व्यवस्थाएँ स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं और सेवा प्रदाताओं को लाभ देती हैं। कुल मिलाकर, चम्पारण धार्मिक पर्यटन के कारण एक स्थानीय आर्थिक केंद्र के रूप में उभरता है।

सामाजिक प्रभाव

धार्मिक पर्यटन सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करता है। विभिन्न धर्मों, समुदायों एवं क्षेत्रों से आने वाले श्रद्धालु सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देते हैं, जिससे आपसी समझ एवं सहिष्णुता विकसित होती है। "छत्तीसगढ़ में स्थित हिंदू, जैन, बौद्ध, ईसाई, सिख एवं इस्लाम धर्म से जुड़े स्थलों पर बहुधार्मिक सहभागिता सामाजिक सद्भाव का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है ।" [9]

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

राजिम पर्यटन स्थल सामाजिक समन्वय एवं सामुदायिक सहभागिता को प्रोत्साहित करता है। धार्मिक मेलों, अनुष्ठानों एवं उत्सवों के आयोजन से विभिन्न वर्गों एवं समुदायों के मध्य पारस्परिक सहयोग एवं सामाजिक एकता सुदृढ़ होती है। कुंभ कल्प जैसे आयोजनों में साधु-संतों, श्रद्धालुओं एवं स्थानीय नागरिकों की सहभागिता से सामाजिक चेतना एवं धार्मिक आस्था को बल मिलता है। पर्यटकों के आगमन से शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सार्वजनिक सेवाओं के प्रति जागरूकता में वृद्धि होती है। साथ ही स्थानीय जनसंख्या में उद्यमशीलता की भावना विकसित होती है। यद्यपि, अत्यधिक भीड़ एवं अस्थायी जनसंख्या वृद्धि के कारण यातायात, स्वच्छता एवं सामाजिक अव्यवस्था जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधान हेतु प्रभावी प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

धार्मिक स्थल समाज में एकता, सहयोग और सामूहिकता की भावना को बढ़ाते हैं। चम्पारण में होने वाले सत्संग, कथा, भजन और सामूहिक महाप्रसाद जैसे आयोजन लोगों में सामाजिक सामंजस्य को बढ़ाते हैं। मेले के समय गाँव के लोग संगठित होकर व्यवस्था और अतिथि-सत्कार में भाग लेते हैं, जिससे सामाजिक सहभागिता बढ़ती है। वैष्णव परंपरा में अहिंसा, प्रेम, सेवा और नैतिकता जैसे मूल्यों पर जोर दिया जाता है, जिसका असर समाज के व्यवहार पर भी दिखाई देता है। "तीर्थ स्थलों के विकास से स्थानीय व्यापार, परिवहन एवं सेवा क्षेत्र को स्थायित्व मिलता है।" [10] बाहरी राज्यों से आने वाले श्रद्धालुओं के कारण सांस्कृतिक आदान-प्रदान और नए सामाजिक संबंधों का निर्माण होता है। इस तरह, यह स्थल समाज में शांति, सहिष्णुता और धार्मिक सद्भाव को मजबूत करता है। साथ ही, धार्मिक मेले और उत्सव स्थानीय समुदाय में एकजुटता और सामूहिक भागीदारी की भावना को बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार के आयोजन सामाजिक ढांचे को सक्रिय बनाए रखते हैं और स्थानीय परंपराओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव

धार्मिक पर्यटन स्थानीय संस्कृति, पारंपरिक रीति-रिवाजों, कला और हस्तशिल्प के संरक्षण में एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में कार्य करता है। "राजिम, चंपारण एवं अन्य तीर्थ स्थलों पर आयोजित मेले सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को सुदृढ़ करते हैं।" [11] धार्मिक आयोजनों के दौरान प्रस्तुत होने वाले लोकनृत्य, संगीत, पारंपरिक वेशभूषा और हस्तशिल्प स्थानीय सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं। इसके माध्यम से छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता और पहचान मिल रही है। सांस्कृतिक दृष्टि से राजिम छत्तीसगढ़ की धार्मिक एवं लोक सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। राजीव लोचन मंदिर, संगम स्थल एवं संबंधित धार्मिक परंपराएँ प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करती हैं। धार्मिक पर्यटन के माध्यम से लोककला, लोकसंगीत, पारंपरिक वेशभूषा, धार्मिक अनुष्ठान एवं सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार होता है।

चम्पारण का सबसे बड़ा प्रभाव सांस्कृतिक क्षेत्र में दिखाई देता है। यह स्थल वैष्णव संस्कृति और पुष्टिमार्गीय परंपरा का प्रमुख केंद्र है, इसलिए यहाँ भक्ति संगीत, हरिकथा, रामायण मंडली, संस्कृत-हिंदी वैष्णव साहित्य, भजन-कीर्तन और धार्मिक अनुष्ठान जीवित संस्कृति के रूप में मौजूद हैं। चम्पारण से जुड़ी वल्लभाचार्य की परंपरा, भारतीय भक्ति आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। धार्मिक आयोजनों का प्रभाव लोक-संस्कृति पर भी पड़ता है, जिसमें छत्तीसगढ़ी लोकगीत, भजनी संस्कृति, पूजा-विधि, रामायण परंपरा और लोक-भाषा का

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

प्रसार शामिल है। तीर्थ के रूप में पहचान बढ़ने से यह स्थल संस्कृति संरक्षण और परंपरा निरंतरता में भी भूमिका निभाता है।

धार्मिक पर्यटन के समक्ष चुनौतियाँ एवं समस्याएँ

धार्मिक पर्यटन के समक्ष चुनौतियाँ एवं समस्याएँ बहुत है जैसे पार्किंग, सड़क, शौचालय, पेयजल, सफाई व्यवस्था और विश्राम स्थल की अनुपलब्धता । भीड़ बढ़ने पर यातायात व्यवस्था बिगड़ जाती है, जिससे ट्रैफिक जाम और पार्किंग अव्यवस्था आम हो जाती है। पर्यावरण और स्वच्छता भी महत्वपूर्ण समस्या है, विशेषकर नदी में स्नान के दौरान प्लास्टिक, प्राथमिक उपचार केंद्र, एम्बुलेंस मार्ग और पुलिस नियंत्रण पर्याप्त नहीं होते।

चम्पारण मुख्यतः संत वल्लभाचार्य के जन्मस्थान और वैष्णव मेला के लिए प्रसिद्ध तीर्थस्थल है, लेकिन यहाँ भी धार्मिक पर्यटन से संबंधित कई समस्याएँ दिखाई देती हैं। सबसे पहले, यहाँ स्थायी बुनियादी ढाँचे की कमी है जैसे पर्याप्त आवास, होटल, शौचालय, पार्किंग और आगंतुक सहायता केंद्र। फाल्गुन मेले के समय अचानक भीड़ बढ़ने से यातायात, सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो जाता है। सफाई और कचरा निस्तारण भी बड़े आयोजनों में समस्या बन जाता है, जिससे पर्यावरणीय अव्यवस्था दिखती है। धार्मिक स्थलों की पवित्रता और सांस्कृतिक संरक्षण भी चुनौती है, क्योंकि व्यवसायिक गतिविधियों और भीड़ से वैष्णव परंपरा की शांत धार्मिक प्रकृति प्रभावित होती है। चम्पारण में गाइड, हेल्पडेस्क और डिजिटल सेवाएँ सीमित हैं, जिससे बाहरी राज्यों से आने वाले यात्रियों को मार्ग एवं व्यवस्था समझने में कठिनाई होती है। स्थानीय समुदाय पर अस्थायी आर्थिक दबाव बढ़ता है और कई बार संसाधनों की कमी महसूस होती है। प्रशासनिक विभागों के बीच समन्वय की कमी और दीर्घकालिक योजना का अभाव भी विकास को रुकता है। इस तरह चम्पारण में धार्मिक पर्यटन की संभावनाएँ तो बहुत हैं, लेकिन सुविधाओं की कमी, पर्यावरणीय दबाव, सांस्कृतिक संरक्षण और प्रबंधन की चुनौतियाँ बनी हुई है ।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत का संरक्षण

धार्मिक स्थलों से जुड़ी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और स्थापत्य विरासत की सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। “राजिम और चंपारण जैसे धार्मिक स्थल छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक स्मृति और परंपरागत मूल्यों के संवाहक हैं।” [12] मंदिरों, मठों, विहारों, गिरजाघरों और दरगाहों के संरक्षण में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ संवेदनशीलता का भी पालन किया जाना चाहिए, ताकि उनकी मौलिकता और पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहे। “छत्तीसगढ़ के धार्मिक स्थल लोक संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण के प्रमुख केंद्र हैं।” [13] राजिम छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जहाँ महानदी, पैरी और सोंढूर नदियों का संगम होने के कारण इसे “छत्तीसगढ़ का प्रयाग” कहा जाता है। यहाँ के प्राचीन मंदिर जैसे राजीव लोचन मंदिर, डोमेश्वर महादेव मंदिर और संगम क्षेत्र के अन्य धार्मिक स्थल कला, स्थापत्य और धार्मिक परंपराओं की अनूठी धरोहर हैं। “छत्तीसगढ़ के धार्मिक स्थल लोक परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।” [14]
इन विरासतों के संरक्षण के लिए मंदिरों का ऐतिहासिक स्वरूप बनाए रखना, प्राकृतिक संगम क्षेत्र की सफाई एवं पर्यावरण संरक्षण तथा राजिम कुंभ जैसे आयोजनों की सांस्कृतिक गरिमा को संरक्षित करना

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

आवश्यक है। सांस्कृतिक दृष्टि से यहाँ की रामायण मंडलियाँ, भक्ति परंपरा, लोकगीत, नदी संस्कार, नदियों में स्नान, मेला संस्कृति और धार्मिक जुलूसों का मौखिक सांस्कृतिक इतिहास भी संरक्षित रखने योग्य है । पर्यटकों के साथ होने वाले सांस्कृतिक संपर्क से स्थानीय संस्कृति को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त होती है। तथापि व्यावसायीकरण एवं आधुनिकता के प्रभाव से सांस्कृतिक मूल्यों में क्षरण की संभावना भी बनी रहती है, जिससे संतुलित एवं सतत पर्यटन विकास की आवश्यकता पर बल दिया जाता है।

चम्पारण वैष्णव संप्रदाय के महान संत और पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक श्री वल्लभाचार्य का जन्मस्थान होने के कारण धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ स्थित बावली मंदिर, महाप्रभुजी मंदिर, बालवाटा मंदिर और संबंधित स्थल वैष्णव दर्शन, भक्ति परंपरा और ऐतिहासिक विरासत के प्रतीक हैं। चम्पारण की सांस्कृतिक विरासत केवल मंदिरों तक सीमित नहीं है, बल्कि यहाँ की हरिकथा परंपरा, वैष्णव, कीर्तन, तत्त्वज्ञान, तथा फाल्गुन **मेला** जैसी सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी जीवित विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन धरोहरों के संरक्षण के लिए मंदिरों की संरचना एवं प्राचीन वास्तुकला का रखरखाव, धार्मिक ग्रंथों एवं परंपराओं का दस्तावेजीकरण, भजनशैली की परंपरा, शैली का संरक्षण, धार्मिक आयोजनों के दौरान सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा आवश्यक है। साथ ही चम्पारण में स्वच्छता व्यवस्था, आगंतुक सहायता, सूचना केंद्र और ऐतिहासिक स्थलों पर विवरण पट्ट लगाने जैसे प्रयास सांस्कृतिक साक्षरता को बढ़ाते है, वैष्णव संप्रदाय के आध्यात्मिक ज्ञान, साहित्यिक धरोहर, भारतीय भक्ति आंदोलन और स्थानीय ऐतिहासिक पहचान को जीवित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। सामाजिक दृष्टि से राजिम और चंपारण ने विभिन्न वर्गों, जातियों और क्षेत्रों के लोगों को एक साझा सांस्कृतिक मंच प्रदान किया है। धार्मिक आयोजनों, मेलों और उत्सवों के माध्यम से सामुदायिक सहभागिता, सेवा भावना और नैतिक मूल्यों को बल मिला है। इससे स्थानीय समाज में सामाजिक एकता, सांस्कृतिक गौरव और सामूहिक पहचान की भावना सुदृढ़ हुई है। आर्थिक परिप्रेक्ष्य में धार्मिक पर्यटन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान की है। रोजगार के अवसरों में वृद्धि, लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास, व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार और अधोसंरचना के विकास से स्थानीय लोगों की आजीविका में सुधार हुआ है। राजिम और चंपारण जैसे स्थलों ने ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों को आर्थिक रूप से सक्रिय बना दिया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ राज्य में धार्मिक स्थल न केवल आस्था और सांस्कृतिक पहचान के केंद्र हैं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, आधारभूत संरचना और सामाजिक समरसता में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। आर्थिक रूप में देखा जाए तो धार्मिक पर्यटन से स्थानीय व्यवसाय, स्वरोजगार, आवास, भोजनालय, परिवहन और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में वृद्धि होती है, जिससे स्थानीय आय और रोजगार सृजन में योगदान होता है। सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव **के रूप में** धार्मिक पर्यटन सामाजिक समरसता, बहुधार्मिक सहभागिता और सांस्कृतिक संरक्षण को प्रोत्साहित करता है। यह स्थानीय परंपराओं, लोककला और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में सहायक है। अधोसंरचना की कमी, परिवहन बाधाएँ, पर्यावरणीय दबाव, प्रबंधन का अभाव और स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी मुख्य बाधाएँ हैं। राजिम एवं चंपारण जैसे प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल छत्तीसगढ़ की धार्मिक आस्था, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक पहचान के सशक्त प्रतीक हैं। पिछले वर्षों में इन स्थलों के विकास और बढ़ते धार्मिक पर्यटन ने यह स्पष्ट कर

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-4 | Issue-1 | January-2026 | Page 28-39

दिया है, कि धार्मिक स्थल केवल आस्था के केंद्र ही नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, आर्थिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रभावी माध्यम भी हैं।

अतः धार्मिक पर्यटन स्थल को सुनियोजित, पर्यावरण-संवेदनशील और समुदाय-आधारित दृष्टिकोण से विकसित किया जाए, तो यह छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित, सतत और समावेशी विकास का सशक्त साधन बन सकता है।

संदर्भ सूची

1. स्मिथ, एम. के. (1992)। *Religious tourism in contemporary society*. लंदन: Routledge पृ. 61.
2. गुप्ता, ए., मिर्झा, एस. (2016)।छत्तीसगढ़ में धार्मिक पर्यटन: संभावनाएँ और चुनौतियाँ। भारतीय पर्यटन अध्ययन पत्रिका, 12(2), 45-58.
3. शुक्ल, प्रदीप, पांडे, सीमा, शुक्ला महेश, छत्तीसगढ़ में पर्यटन, पृ. 204–206
4. तिवारी, डी. (2021)। छत्तीसगढ़ के धार्मिक पर्यटक स्थलों का क्षेत्रीय विकासात्मक विश्लेषण।राष्ट्रीय भूगोल एवं पर्यटन जर्नल, 14(1), 50-68.
5. स्मिथ, एम. के. (1992)। *Religious tourism in contemporary society*. लंदन: Routledge पृ. 61.
6. सिंह, आर, धार्मिक पर्यटन : सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव, पृ. 35
7. गुप्ता, ए., मिर्झा, एस. (2016)।छत्तीसगढ़ में धार्मिक पर्यटन: संभावनाएँ और चुनौतियाँ। भारतीय पर्यटन अध्ययन पत्रिका, 12(2), 45-58.
8. शर्मा, आर.सी, धार्मिक पर्यटन और ग्रामीण विकास, 53
9. शिंदे, आर. (2018)।धार्मिक पर्यटन का प्रशासन और प्रबंधन: भारतीय दृष्टिकोण। पर्यटन और संस्कृति अध्ययन, 5(2), 22-37.
10. शर्मा, आर.सी, धार्मिक पर्यटन और ग्रामीण विकास, 53
11. शुक्ल, प्रदीप, पांडे, सीमा, शुक्ला महेश, छत्तीसगढ़ में पर्यटन, पृ. 204–206
12. मिश्र, एस.एन., छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत, पृ. 152–154
13. मिश्र, एस.एन, छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत, पृ. 89
14. शुक्ल, प्रदीप, पांडे, सीमा, शुक्ला महेश, छत्तीसगढ़ में पर्यटन, पृ. 204–206